==========

डा. भावना माहुले
सहा. प्राध्यापक (भूगोल)
शासकीय वि.या.ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
जिला दुर्ग (छ.ग.)

==========

बी.ए. द्वितीय वर्श (भूगोल)
प्रथम प्रश्नपत्र– आर्थिक एवं संसाधन भूगोल
इकाई–2 – मुख्य फसल – चाय

==========

बागानी फसल
(Plantation Crop)

चाय
(TEA)

चाय एक मुद्रादायिनी व्यापारिक पेय पदार्थ है,जो बागानी या रोपण कृशि के अंतर्गत आती है। चाय, सदापर्णी झाड़ी की सुखाई हुई पत्ती है। इन पत्तियों में थीन (Theine) नामक तत्व होता है, जिससे इसके प्रयोग से हल्का सा नशा होता है और स्फूर्ति आती है। चाय चीन मूल का पौधा है और इसका प्रयोग सर्वप्रथम चीन में आरंभ हुआ।

चाय की कृशि, बागानो में की जाती है। सर्वप्रथम पौधाशाला में चाय की पौध तैयार की जाती है। जब पौध लगभग 20 से.मी. लंबी हो जाती है, तब उसे पर्वतीय ढालो पर स्थित भूमि पर प्रतिरोपित किया जाता है। चाय के पौधो को लगभग 1.50 मीटर की दूरी पर पंक्तियों में लगाया जाता है। चाय का पौधा 2 मीटर तक उंचा हो सकता है, परंतु समय समय पर उसकी कटांई–छंटाई की जाती है, ताकि अधिक पत्तियां आ सके तथा पत्तियों को आसानी से तोड़ा जा सके। चाय का बागान लगाने के चार–पांच वर्श पश्चात् पत्तियों को तोड़ा जाता है, एक बार लगाये गये बागान से सामान्यतः 50–60 वर्श तक लगातार पत्तियां प्राप्त होते रहती है। कुछ क्षेत्रो में तो 80 वर्श तक झाड़ी से पत्तियां प्राप्त होते रहती है। चाय के बागान के एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में लगभग 10,000 चाय के पौधे लगाये जाते है।

चाय के उत्पादन हेतु वांछित भौगोलिक दशाएं
(Geographical Condition)

1. जलवायु (Climate)

चाय उश्ण एवं उपोश्ण कटिबंधीय पौधा है, जिसके लिये उच्च ताप और अधिक वर्शा की आवश्यकता होती है।

अ. तापमान (Temperature)

चाय के उत्पादन हेतु 25 से 30 डिग्री तापमान आवश्यक है।

ब. वर्शा (Rainfall)

चाय के उत्पादन के लिये 125 से 250 से.मी. वार्शिक वर्शा अनुकूल होती है। वर्श भर रुक रुक कर वर्शा होना, कोहरा एवं धुंध का मौसम इसके लिये लाभकारी होता है।

2. मृदा (Soil)

चाय के उत्पादन हेतु गहरी उपजाउ, फास्फोरस, पोटाश, लोहांश तथा जीवांश युक्त मृदा श्रेश्ठ होती है, ताकि इसकी झाड़ी तेजी से बढ़ सके और चाय में अधिक सुगंध पैदा हो सके।

मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि के लिये नाइट्रोजन और पोटाश युक्त रासायनिक उर्वरको का भी समय समय पर प्रयोग किया जा सकता है।

3. भूमि (Land)

चाय के पौधो की जड़े पानी के जमा होने से सड़ जाती है। अतः तीव्र ढाल वाले क्षेत्र अर्थात् पर्वतीय ढाल चाय की खेती के लिये उपयुक्त होते है।

4. श्रम (Labour)

चाय के पौधो को तैयार करना, पत्तियां चुनना, सुखाना एवं डिब्बो में बंद करना आदि के लिये सस्ते और कुशल श्रमिको की आवश्यकता होती है। पत्तियों को तोड़ने का कार्य स्त्रियां अपेक्षाकृत अधिक कुशलता से कर लेते है।

5. पूंजी (Capital)

चाय को प्रायः बड़े बड़े बागानो में लगाया जाता है, जिसकी व्यवस्था के लिये पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि, विश्व के अधिकांश चाय के बागान पूंजीपतियो अथवा राश्ट्रीय या विदेशी कंपनियों द्वारा संचालित है।

चाय के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र
(Major Tea Producing Areas)

1. चीन (China)

चीन विश्व का वृहत्तम चाय उत्पादक देश है। चीन में चाय मुख्य रुप से पूर्वी तटवर्ती पर्वतीय ढालो पर यांगटिसीक्यांग की निचली घाटी, जेचवान बेसिन, चियांग जियांग बेसिन के पहाड़ी प्रदेश और सीक्यांग घाटी में उगायी जाती है।

चीन में हरी तथा काली दोनो प्रकार की चाय पैदा की जाती है। यहां पर चाय के बागान बहुत छोटे आकार के है। नवीनतम प्राप्त आंकड़ो के

अनुसार माह अप्रेल 2020 चीन में 10,00,130 टन (दस लाख एक सौ तीस टन) चाय का उत्पादन हुआ है।

2. भारत (India)

भारत विश्व का द्वितीय वृहत्तम चाय उत्पादक देश है। भारत में चाय के मुख्य चाय उत्पादक राज्य असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक आदि है। जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः–

अ. असम

असम भारत का सबसे बड़ा चाय का उत्पादक राज्य है। असम की अधिकांश चाय ब्रम्हपुत्र तथा सूरमा घाटियों के बड़े बागानो से प्राप्त होती है। अब छोटे बागानो में भी पर्याप्त चाय पैदा होने लगी है। मुख्य उत्पादक जिले शिवसागर, दरांग, लखीमपुर, नवगांव, कामरुप तथा गोलपाड़ा है।

ब. पश्चिम बंगाल

यह चाय का दूसरा बड़ा उत्पादक राज्य है। मुख्य उत्पादक जिले दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी तथा कुचबिहार है। दार्जिलिंग की चाय उत्तम प्रकार की सुगंधित चाय होती है, जिसकी देश व विदेश में बड़ी मांग रहती है।

भारत की लगभग 80 प्रतिशत चाय उत्तरपूर्वी क्षेत्र से प्राप्त होती है। जिसमें असम और पश्चिम बंगाल प्रमुख उत्पादक राज्य है।

स. दक्षिण भारत

दक्षिण भारत में तमिलनाडू, केरल तथा कर्नाटक चाय के मुख्य उत्पादक राज्य है। यहां नीलगिरी, अन्नामलाई तथा इलायची की पहाड़ियो की ढलानो पर चाय उगाई जाती है।

द. अन्य राज्य

उपर्युक्त राज्यो के अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा व मंडी, उत्तरांचल में देहरादून, अल्मोड़ा व गढ़वाल आदि जिले महत्वपूर्ण है।

महाराश्ट्र, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय व अरुणाचल प्रदेश में भी थोड़ी मात्रा में चाय का उत्पादन किया जाता है।

नवीनतम प्राप्त आंकड़ो के अनुसार माह अप्रेल 2020 भारत में 9,00,000 टन (नौ लाख टन) चाय का उत्पादन हुआ है।

3. श्रीलंका (Sri lanka)

श्रीलंका चाय का प्रमुख उत्पादक एवं निर्यातक देश है। मध्यवर्ती पर्वतीय ढाल तथा मध्यवर्ती भागो की घाटियों में भी चाय के बगीचे लगाये गये है। कैण्डी नगर का समीपवर्ती क्षेत्र उत्तम किस्म की चाय के लिये प्रसिद्ध है। श्रीलंका में औसतन तीन लाख मीट्रीक टन चाय का उत्पादन किया जाता है।

श्रीलंका के कुल निर्यात मुल्य का लगभग आधा चाय से प्राप्त होता है, और चाय श्रीलंका की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।

4. टर्की (Turkey)

टर्की में चाय बागान के मुख्य क्षेत्र कालासागर तट के निकटवर्ती पहाड़ी ढलानो पर है। इसके अतिरिक्त पश्चिमी तटीय भाग में भी चाय उगायी जाती है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशको में टर्की के चाय उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई है। वर्तमान में वर्श 2020 में 1,74,000 टन चाय का उत्पादन हुआ।

5. इंडोनेशिया (Indonesia)

इंडोनेशिया में प्राचीन काल से चाय का उत्पादन किया जाता रहा है। यहां जावा तथा सुमात्राा दो प्रमुख चाय उत्पादक द्वीप है। इन दोनो द्वीपो पर चाय के बागान 300 से 1500 मीटर की उंचाई पर लगाये गये है। जावा में ज्वालामुखी विस्फोट से प्राप्त होने वाली काली मिट्टी चाय की कृशि के लिये बड़ी अनुकूल है। नवीनतम प्राप्त आंकड़ो के अनुसार माह अप्रेल 2020 इंडोनेशिया में 1,57,000 टन (एक लाख संतावन हजार टन) चाय का उत्पादन हुआ है।

6. जापान (Japan)

विश्व की लगभग 4 प्रतिशत चाय का उत्पादन जापान मे होता है, परंतु यहां पर प्रति हेक्टेयर उपज लगभग 1800 किलोग्राम है, जो भारत तथा चीन की तुलना में बहुत अधिक है। चाय मुख्यतः होंशू, शिकोकू तथा क्यूशु द्वीपो के पर्वतीय ढालो पर उगाई जाती है। यहां वर्श में चार बार चाय की पत्तियां तोड़ी जाती है। हरी चाय का निर्यात किया जाता है। नवीनतम प्राप्त आंकड़ो के अनुसार माह अप्रेल 2020 जापान में 88,900 टन (अठ्यासी हजार नौ सौ टन) चाय का उत्पादन हुआ है।

7. अन्य चाय उत्पादक क्षेत्र

उपर वर्णित चाय के प्रमुख उत्पादक देशो के अतिरिक्त पूर्वी अफ्रीका में केन्या, एशिया मे वियतनाम, ईरान, बंगलादेश आदि, दक्षिण अमेरिका में अर्जेटीना में भी चाय की कृशि की जाती है।

चाय का अंर्तराश्ट्रीय व्यापार (International Trade of Tea)

अधिकांश चाय का उत्पादन उश्ण कटिबंधीय विकासशील देशो में होता है, और इसकी सर्वाधिक मांग शीतोश्ण कटिबंधीय विकसित देशो में है।

निर्यातक देश (Exporting Countries)

श्रीलंका, चीन, भारत, इंडोनेशिया, केन्या, बंगलादेश तथा जापान चाय के मुख्य निर्यातक देश है।

आयातक देश (Importing Countries)

ब्रिटेन, जर्मनी, नीदरलैंड, इटली, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा रुस, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड चाय के मुख्य आयातक देश है।

भारत परंपरागत रुप से विश्व का सबसे बड़ा चाय का निर्यातक रहा है, परंतु पिछले कुछ वर्शो से श्रीलंका से चाय के निर्यात में बड़ी तीव्र गति से वृद्धि हुई है। चाय के निर्यात में श्रीलंका अग्रणी देश है, और चाय उसकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।

भारत के विदेश व्यापार में चाय प्रायः सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु रही है, परंतु पिछले दो तीन दशको में भारत में प्रतिव्यक्ति उपयोग मात्रा में वृद्धि होने से देश में ही चाय की ज्यादा खपत हो जाती है। अतः पिछले कुछ वर्शो से भारतीय चाय के निर्यात में कमी आयी है।

चाय के निर्यात में श्रीलंका, चीन एवं भारत की भागीदारी में क्रम प्रायः बदलता रहता है, क्योंकि इसका निर्यात इन तीनो देशो में लगभग समान है। पिछले कुछ वर्शो में भारतीय चाय के निर्यात में कमी आयी है, जिसका कारण आंतरिक मांग (खपत) में वृद्धि है।

चाय के प्रमुख उत्पादक देशो को विश्व के मानचित्र में दर्शित करता हुआ, मानचित्र पृथक से संलग्न है, जिसका भी अवलोकन करें।

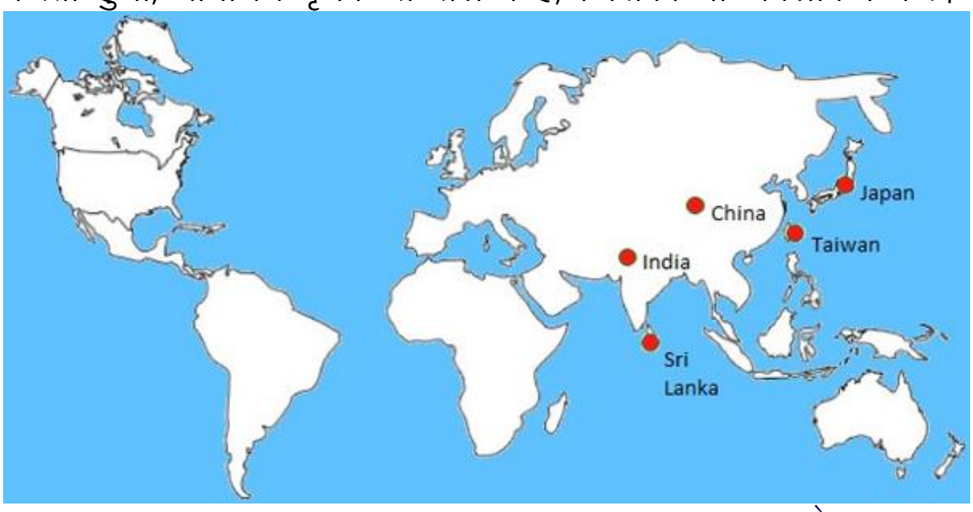

डा. भावना माहुले
सहा. प्राध्यापक (भूगोल)
शासकीय वि.या.ता. स्ना. स्वशासी महाविद्यालय
जिला दुर्ग (छ.ग.)